

# MP Board Class 11th Special Hindi Sahayak Vachan Solutions Chapter 3 बन्दी पिता का पत्र

---

## निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए

प्रश्न 1.

‘बन्दी पिता का पत्र’ किसने किसे संबोधित कर लिखा है?

उत्तर:

‘बन्दी पिता का पत्र’ पंडित कमलापति त्रिपाठी ने अपने प्रिय पुत्र लाल जी को सम्बोधित करते हुए लिखा है।

प्रश्न 2.

पत्र में कैदियों के जीवन के विषय में किन-किन बातों का उल्लेख किया है? (2017)

उत्तर:

पत्र में कैदियों के जीवन के विषय में जिन बातों का उल्लेख है, वे इस प्रकार हैं- इन कैदियों के जीवन में आनन्द, सुख और सन्तोष के लिए स्थान नहीं होता है। इनके साथ पशुओं जैसा व्यवहार किया जाता है, उन्हें पीसा जाता है। इन कैदियों को समाज से उपेक्षित समझा जाता है। संसार में कहीं पर भी सम्मानपूर्वक इनको खड़े होने का कोई स्थान नहीं है। इनका भविष्य भी अन्धकारपूर्ण ही होता है। इन कैदियों के जीवन के अनेक वर्ष यहाँ ही समाधिस हो गए।

इन जेल के कैदियों के जीवन में कहाँ है बसन्त? और कहाँ है सावन की मेघगर्जन? यहाँ ये ऐसे प्राणी हैं जिनकी सारी जवानी इसी में कट गई। बुढ़ापा यहाँ आ गया और अब मौत भी इन्हें यहाँ ही आकर समाधिस्थ करेगी। वे, फिर किसी भी बन्धन से मुक्त हो जाएँगे।

जेल के कैदियों में ऐसे व्यक्तियों की भी संख्या इतनी अधिक है जिन्हें यह भी पता नहीं कि उनके घर की क्या दशा है? अपने जिन बच्चों को छोड़ आए थे, वे अब कैसे हैं? उनके घर वाले भी अब उन्हें भूल चुके हैं। यदि आज जेल से छूट कर जाएँ, और अपने सौभाग्य से अपने बेटों से मिलें, और अपनी बीबी के सामने खड़े हों तो शायद न बेटा बाप को पहचानेगा और न ही बीबी अपने मियाँ को।

क्या कभी कोई ऐसी कल्पना भी कर सकता है कि इनके हृदय में भी रस का संचार होगा, सम्भव है? क्या होली, क्या दीवाली-किसी में यह सामर्थ्य कहाँ हो सकती है कि इनके हृदय में टूटे हुए तारों को पुनः जोड़ दिया जाए और फिर उनमें से झंकृति निकल सके।

प्रश्न 3.

जीवन के सुख-दुःख से सम्बन्धित विचारों को लेखक ने किस प्रकार व्यक्त किया है?

उत्तर:

प्रकृति एक नटी है। लीलामयी प्रकृति मानव में वह क्षमता उत्पन्न करती है जिससे सुख-दुःख की परिस्थिति में एक सामंजस्य स्थापित हो उठता है। मनुष्य की इस क्षमता को अद्भुत ही कहा जायेगा। परिस्थितिवश स्वयं को उसके

अनुकूल किस सरलता से ढाल लेता है। मनुष्य के हृदय में कला, संतुलन और धैर्य का कितना माद्दा है कि प्रत्येक परिस्थिति को अपने अनुसार ढालने में कोई कसर नहीं छोड़ता। अपनी इसी क्षमता के बलबूते पर मनुष्य जीवन धारण करने में समर्थ है।

मेरा स्वयं का अनुभव है कि यह जगत अनन्त वेदना और दुःखों से ही भरा हुआ है। यह जीवन प्रबल गति से बहते महान् काल रूपी नदी के प्रवाह पर उठे हुए बुलबुले के समान क्षणिक है। यह जीवन अस्थायी अस्तित्व लिए हुए है। इस जीवन के कितने क्षण ऐसे हैं जो सुख और शान्ति से बीते हैं। इस जीवन में सुख, आनन्द और तृप्ति नाम का पदार्थ ढूँढ़े नहीं मिल सकता।

यह जीवन बित्तेभर का है, उसके भी बड़े हिस्से में वेदना, पीड़ा और अवसाद भरा हुआ है। यदि सुख के कुछ क्षण यहाँ आ भी जाते हैं, तो वे बिजली की भाँति क्षण भर कौंध जाते हैं और मानव जीवन जो प्रायः अंधकार से भरा हुआ है, कभी-कभी आलोकित हो उठता है। सुख का प्रकाश शीघ्र ही लुप्त हो जाता है। यह सुख नश्वर है, क्षणिक है। परन्तु इस सुख की क्षणिकाओं में सत्य समाया रहता है। यह सत्य अमिट स्मृतियाँ छोड़ चला जाता है। इसी न मिटने वाली स्मृति को जीवन की शक्ति का स्रोत कहते हैं; यही स्मृति निराशा में आशा का संचार करती है, अंधकार में प्रकाश विकीर्ण करती है। मृत्यु और विनाश में जीवन का सृजन का आधार बनकर पुष्ट होती है।

संसार जीव दुःखों से प्रभावित है। समाज में कौन ऐसा है जो तप्त हो, और अभावों से ग्रस्त न हो। फिर भी दुःखमय, क्षणिक जीवन के प्रति मनुष्य का इतना मोह क्यों? सुख के कणों को बटोरने के प्रयास में जीवन कितने दुःख, वेदना और यातना सहन करता है। कितने अचम्भे की बात है यह?

प्रश्न 4.

पत्र-लेखक ने गाँधी जी के सत्याग्रह के विषय में क्या लिखा है?

उत्तर:

ब्रिटेन अपनी साम्राज्यवादी नीतियों से लोगों के हृदय में अपने प्रति घृणा की आग सुलगा रहा था। यह अवस्था असहनीय हो चुकी थी जिससे लोगों में झुंझलाहट पैदा हो रही थी। इस महान् देश के करोड़ों लोग नपुंसकतापूर्ण ग्लज्जा का उद्रेक कर रहे थे। उस समय हम सोच रहे थे कि गाँधी जी विकट संकट में फँस गए हैं। गाँधी जी उन लोगों में से थे जो अपनी प्रतिज्ञा से एक कदम भी पीछे हटने वाले नहीं थे। शरीर को चाहे दो भागों में विभक्त क्यों न कर दिया जाए? गाँधी जी के शरीर में विदेहत्व का आदर्श सजीव रूप में मूर्तिमान हो चुका था। आदर्श और सत्य के लिए उस व्यक्ति की दृष्टि में न जीवन का मूल्य है और न जगत का।

परन्तु दूसरी ओर स्वार्थ में अंधे हुए कठोर हृदय साम्राज्यवादियों की सत्ता देखी। जिनमें नर रक्तपान करते-करते मनुष्यता नाम के किसी पदार्थ की छाया भी नहीं रह गई है। भय होता, भय नहीं विश्वास था कि यदि कहीं, वह अशिव मुहूर्त आ ही गया जब गाँधी जी की भौतिक देह इस तप के बोझ को सहन करने में असमर्थ होती दिखाई देगी, तो उस समय भी वे मानवता की इस विभूति और पृथ्वी के इस अमूल्य रत्न को नष्ट कर देने में आगा-पीछा न करेंगे। आखिर वे तो मनुष्य ही थे जिन्होंने ईसा के तपःपूत शरीर में लोहे की कील ठोंककर प्रसन्नता और सन्तोष प्राप्त किया था। यदि इतिहास उसी की पुनरावृत्ति करे तो उसे कौन रोक सकेगा।

अब हम यह अनुभव कर रहे हैं कि आज गाँधी नहीं मर रहा है। बल्कि उसके साथ वह आदर्श और वह सत्य भी मर रहा है जिसका प्रतिनिधित्व वह स्वयं कर रहा है और जिसका दिव्य संदेश लेकर यह देवदूत अग्नि पर अवतीर्ण हुआ है। अब प्रश्न यह भी उठता है कि क्या मानव के चरम कल्याण के लिए और उसके लिए चेष्टा करना ही कोई जघन्य अपराध है जिसके कारण इतना भयानक दंड मिल रहा है।

यदि मानव समाज को संहार से, विनाश से और पाप से बचाना है, तो उसकी समस्त व्यवस्था को अहिंसा के आधार पर स्थापित करने का आयोजन करना ही होगा। लोग कह देते हैं कि अहिंसा मानव-प्रकृति के प्रतिकूल है और कभी हिंसा का उन्मूलन संभव नहीं है। वे इतिहास को साक्षी रूप में उद्धृत करते हैं। लेकिन लेखक के अनुसार लोग उसी इतिहास को गलत ढंग से देखते हैं। वे यह नहीं देखते कि विकास-पथ का पथिक मानव सदा प्रवृत्तियों से युद्ध करता। उनका संयम और नियंत्रण करता रहता तो आगे बढ़ता चला गया होता। उसकी यही साधना संस्कृतियों को जन्म देती रही है।

प्रश्न 5.

कैदियों ने होली के उत्सव को किस प्रकार मनाया था?

उत्तर:

आज जेल में कैदियों द्वारा होली का उत्सव मनाया जा रहा है। मैंने अपने कानों से अभी-अभी मंद-मंद किन्तु उनके उल्लास से परिपूर्ण स्वर लहरी को सुना है। यह स्वर लहरी मेरे पास वाली बैरक से सुनाई पड़ रही है। परन्तु इन बेचारे कैदियों के जीवन में आनन्द कहाँ? सुख और सन्तोष के क्षण कहाँ? इन्हें तो समाज से उपेक्षित रखा गया है। ये समाज में सम्मान से खड़े भी नहीं रह सकते। इनके जीवन का महत्त्वपूर्ण हिस्सा कैद में ही समाधिस्थ हो गया है। फिर भी अपने हृदय की भावनाओं को अपनी मस्त स्वर लहरियों में व्यक्त करते हुए इन्हें देख रहा हूँ।

इन्होंने ढपली बनाई है। धुंधरू बनाए हैं। फटे-पुराने चिथड़ों को एकत्रकर रंगा है। अपनी-अपनी बैरकों से बाहर निकल आए हैं और वे स्वाँग रच रहे हैं। फगुआ गा रहे हैं। कोई-कोई तो धुंधरू पहनकर नाच रहा है। इन अभागे कैदियों का उल्लास और उन्माद दर्शनीय है।

स्वतंत्र वायु और निर्मुक्त अनंत आकाश से भी वंचित होकर वे जीवन को कुछ क्षण के लिए मोहक और आकर्षक बनाने में सफल हुए हैं। आज होली न आई होती, तो आज इन्हें इतना भी नसीब न हुआ होता।

प्रश्न 6.

ब्रिटेन की सरकार की मनमानी से लेखक को क्यों क्षोभ हुआ?

उत्तर:

ब्रिटेन की सरकार साम्राज्यवादी है। वह सरकार निष्ठुरता की पराकाष्ठा से ऊपर तक जा चुकी है। उसकी निष्ठुरता के विरुद्ध लोगों के हृदयों में विरोध की आग फूट पड़ने लगी है। उसने जो अवस्था उत्पन्न की है, वह असह्य है, जिससे ब्रितानी शासक वर्ग किसी भी भारतीय की झंझलाहट के पात्र हो सकते हैं। ब्रिटिश सरकार की ज्यादतियों को भारत जैसे महान् देश के लोग सहन कैसे कर रहे हैं? शायद उनमें नपुंसकता का संचार हो गया है। इससे तो लज्जा का उद्रेक हुआ है।

अब बात आती है, गाँधी जी द्वारा आमरण उपवास की। हम लोग सोचते हैं कि गाँधी जी किसी विकट संकट में पड़ गए हैं। गाँधी जी उन लोगों में से एक हैं जो अपनी प्रतिज्ञा से डिगना नहीं जानते; चाहे उनके शरीर के कितने ही टुकड़े क्यों न हो जायें? वस्तुतः उनमें विदेहत्व का एक आदर्श रूप मूर्तिवान हो गया है, जिसमें सजीवता है। गाँधी जी अपने आदर्श और सत्य के लिए जीवन त्याग सकते हैं, जगत से नाता छोड़ सकते हैं। अतः उनके लिए जीवन और जगत-अपने आदर्श और सत्य के लिए कोई महत्त्व नहीं रखते।

अब थोड़ा-सा नर-पिशाचियों की ब्रितानी सरकार पर विहंगम दृष्टि डालते हैं, तो हम पाते हैं कि वे अपने स्वार्थ में अंधे हो चुके हैं। वह सरकार साम्राज्यवादियों की है। उन स्वार्थी साम्राज्यवादी सरकार की सत्ता नर रक्तपात को मौन खड़ी देख सकती है। उन लोगों में मानवता का एक बिन्दु रूप भी नहीं है। यह अत्यन्त भय की अथवा अशिवता की बात घटित हो जाती है, जिसका हम सबको भय था, और गाँधी जी की भौतिक देह तप के गहन बोझ को सहन करने में असमर्थ हो जाती तो क्या इस मानवता की विभूति और पृथ्वी के रत्न गाँधी को नष्ट करने देने में

क्या हम भारतीय आगा-पीछा न करेंगे? अर्थात् अवश्य करेंगे। आखिर वे मनुष्य ही तो थे; जिन्होंने तप से पवित्र शरीर वाले ईसा मसीह के शरीर में लोहे की कील ठोक दी और स्वयं उन्होंने प्रसन्नता और सन्तोष का अनुभव किया। इतिहास, यदि उसी की पुनरावृत्ति करे तो कर सकता है, उसे रोकने वाला कौन है?

प्रश्न 7.

इस पत्र के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

इस पत्र के माध्यम से लेखक कहना चाहता है कि-

(1) प्रकृति ने मनुष्य की रचना की है और उसमें विचित्रता पैदा की है कि मनुष्य सदैव सुख और दुःख में सामंजस्य बैठाता रहा है। इस सामंजस्य की क्षमता भी उसमें अद्भुत है। सुख क्षणिक होता है। दुःख की अन्धेरी रात्रि अपार होती है। सुख की स्मृतियाँ जीवन में शक्ति, ऊर्जा और उत्साह की स्रोत कहलाती हैं।

(2) लेखक वैदिक युग के समाज का दिग्दर्शन कराता हुआ कहता है कि उस युग में स्त्री-पुरुष समाज के उत्सवों में समान रूप से भाग लेते थे। खेलों और उत्सवों तथा क्रीड़ाओं में दोनों की ही सहभागिता महत्त्व रखती थी।

(3) उस युग में इन उत्सवों और पर्वों पर सम्पन्न आयोजनों में ही युवक-युवतियाँ अपने वर और वधुओं का वरण कर लेती थी। माता-पिता की और अन्य सामाजिक रूप से महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों की उपस्थिति में यह स्वयंवर सम्पन्न हुआ करते थे। पुरातन आर्यों की संस्कृति सुसम्पन्न थी।

(4) आज के होली-दीवाली आदि उत्सवों पर बन्धनयुक्त कल्पित आजादी विषैली हो गयी है। जीवन में पराधीनता का बन्धन सत्य नहीं है। आज हमें सत्य और असत्य से मिश्रित जीवन का उपभोग करने की बाध्यता अनुभव हो रही है।

(5) हम भारतीयों ने लम्बे समय तक पराधीनता के कष्ट भोगे हैं। इस पराधीनता में साम्राज्यवादी सत्ता की निष्ठुरता ने सभी भारतीयों को शताब्दियों तक झुलसाया है। फिर भी गाँधी जी ने विश्वमानव को अपने शुद्ध तपभूत मन से यह बता दिया कि हिंसा पर अहिंसा विजय पा सकती है, यदि उसके पालन करने वाले सत्य और अपने आदर्श को जीवित रखने के लिए कटिबद्ध हैं। यद्यपि हिंसा मनुष्य में प्राकृत रूप से मौजूद है। सत्य कभी मरता नहीं है।

(6) यदि मानव समाज को संहार से, विनाश से और पाप से बचाना है तो समाज की समस्त व्यवस्था को अहिंसा के आधार पर स्थापित करना होगा। मनुष्यों का कहना है कि अहिंसा मानव-प्रकृति के प्रतिकूल है। अतः हिंसा का उन्मूलन कभी भी सम्भव नहीं है। परन्तु उन्हें यह समझने की कोशिश करनी होगी कि विकास पथ का पथिक मानव सदा प्रारम्भिक प्रवृत्तियों से युद्ध करता रहा है, उन पर संयम साधता रहा है, उन पर नियंत्रण करता रहा है, और परिणामतः वह आगे बढ़ता गया है। इसी तरह की साधना से विश्व में संस्कृतियों ने जन्म लिया।

(7) मनुष्यता का इतिहास परम साधना का इतिहास है। सहज प्रवृत्तियों का उन्मूलन मानव द्वारा सम्भव नहीं है। लेकिन उन प्रवृत्तियों को एक व्यवस्था दे सकता है। उन्हें कला के रंग से रंग सकता है। उन्हें नियंत्रित कर सकता है। इस सहज प्रवृत्तियों को उन्नत पथ की ओर मोड़ा जा सकता है। हिंसात्मक प्रवृत्ति के साथ ही मनुष्य में उसके ऊपर संयम करने की प्रवृत्ति भी तो मानव के अन्दर प्रकृति ने प्रदान की है। इस प्रकार मानव के अन्दर एक विशेष गुण है, वह है मनुष्य का द्वन्द्वात्मक स्वरूप। गाँधी जी ने बताया कि इस हिंसात्मक प्रवृत्ति पर विजय पाने में असफलता, मानवता की पुनीत साधना की असफलता होगी।

(8) मनुष्य लेखन के माध्यम से अपने मन में उठे उद्गारों को स्पष्ट कर देता है। यह उसकी कल्पना शक्ति की अभिव्यक्ति है। जिस पर अन्तःकरण की छाप लगी हुई होती है। लेखक के मन की अनुभूतियाँ जीवन के स्वरूप को बताती हैं। समस्याओं का समाधान आकलित होता है। वैचारिक भिन्नता अनिवार्य है। लेकिन आशा है कि भारत का विविधमय स्वरूप प्रेम और सौन्दर्य के सूत्र में अभिन्नता से पिरोया हुआ होने की आशा की जाती है।